IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

फणीष्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यास मैला आंचल का विवेचनात्मक अध्ययन

पूजा षर्मा
षोध छात्र (हिन्दी विभाग)
जीवाजी विष्वविद्यालय
ग्वालियर म.प्र.

षोध सार

हिन्दी उपन्यास–साहित्य में जिन चन्द कथाकृतियों ने युगान्तर उपस्थित किया है, मैला आंचल उन्हीं में से एक है। 1954–55 में इस उपन्यास का प्रकाशन एक घटना की तरह था। इसकी कथाभूमि उत्तरी बिहार का पूर्णिया अंचल है और कथाकाल आजादी के कुछ बरस बाद का एक सामाजिक और राजनीतिक चेतनासम्पन्न लेखक की हैसियत से रेणु यहाँ उस परिवर्तन को बड़ी बारीकी से चित्रित करते हैं, जो आजादी के फलस्वरूप गाँवों में आया है और जो सिर्फ परिवेशगत ही नहीं, बल्कि भीतरी व्यक्ति के मनोजगत में भी घट रहा है। इसके लिए लेखक ने लोक–संस्कृति, लोक विश्वासों और लोगों के जीवनक्रम पर पड़ने वाले प्रभावों को गहरी आत्मीयता से उकेरा है।

इसका समूचा कथावृत्त अपनी रोचकता और मार्मिकता में व्यापक लोकरूपों को आत्मसात किए हुए है। वस्तुतः रेणु की आंचलिक संलग्नता, उनकी रागात्मक कथादृष्टि और रचनात्मक भाषा–शैली इस उपन्यास के पात्रों और परिवेश को पाठकीय अनुभव का जीवन्त और अविस्मरणीय अंग बना देती है।

मैला आँचल के मूल्यवादी चरित्रों में रामकिरपालसिंघ, सराजी बलदेव गोप, मार्टिन साहब, महारानी चम्पावती, तनुकलाल, षिव षंकर सिंह एवं हरगौरी ये सभी पात्र मूल्यवाद को मानते है। इनके विचारों में मूल्यवादी विचारधारा है। अधिकतर मैला आँचल के पात्र ग्रामीण परिवेष में रहने वाले हैं। उनके विचारों में सनातनी मूल्य है।

मुख्य बिन्दु– कथाकृतियों, मैला आंचल, कथाभूमि, चेतनासम्पन्न, हैसियत, फलस्वरूप, परिवेषगत, जीवनक्रम, मार्मिकता, लोकरूपों, कथादृश्टि, अविस्मरणीय।

षोध प्रपत्र

फणीष्वरनाथ रेणु के आंचलिक उपन्यासों में मानव मूल्यों को व्यक्त किया है। इनके अधिकतर उपन्यास ग्राम जीवन पर आधारित है। इनके अधिकतर पात्र प्रगतिषील, चेतनायुक्त एवं जीवन से संघर्श करने वाले है। इनके अधिकतर पात्रों में ग्रामीण परिवेष के संस्कार समाहित हैं, जिनमें ममता, त्याग और आत्मबल को दर्षाया है। रेणु का मैला आंचल नामक उपन्यास मूल्यवादी चरित्र पर आधारित है जिनमें लोक संस्कृति, लोक गरिमा, लोक कथायें एवं लोक गाथाऐं हैं।

गाँव में किसी के यहाँ शादी–ब्याह या श्राद्ध का भोज हो, गृहपति गले में कपड़े का खूँट डालकर, कमला मैया को पान–सुपारी से निमंत्रित करता था। इसके बाद पानी में हिलोरें उठने लगती थीं, ठीक जैसे नील के हौज में नील मथा जा रहा हो । **"फिर किनारे पर चाँदी के थालों, कटोरों और गिलासों**

का ढेर लग जाता था । गृहपति सभी बर्तनों को गिनकर ले जाता था और भोज समाप्त होते ही कमला मैया को लौटा आता था । लेकिन सभी की नीयत एक जैसी नहीं होती । एक बार एक गृहपति ने कुछ थालियाँ और कटोरे चुरा रखे। बस, उसी दिन से मैया ने बर्तनदान बंद कर दिया और उस गृहपति का तो वंश ही खत्म हो गया–एकदम निर्मूल!''[1] उस बिगड़ी नीयतवाले गृहपति के बारे में गाँव में दो रायें हैं–राजपूतटोली के लोगों का कहना है, वह कायस्थटोली का गृहपति था; कायस्थटोलीवाले कहते हैं, वह राजपूत था। ''मैला आँचल'' में ग्रामीण परिवेष में रहने वाले लोगों की परम्पराओं को दर्षाया है। लोग किस प्रकार से षादी, विवाह एवं श्राद्ध में अपनी परम्पराओं को एवं मूल्यवादी व्यवहार को करते है। गाँव में राजपूतटोली, कायस्थटोली एवं अन्य जातियों की टोलियों को दर्षाया है। गाँव में जातिवाद और जमींदारी प्रथा मौजूद है।

''तंत्रिमाटोली में सुरंगा–सदाब्रिज की कथा हो रही है। मँहगूदास के घर के पास लोग जमा हैं। पुरैनिया टीसन से एक मेहमान आया है, रेलवे में काज करता है । तंत्रिमाटोली के लोग कहते हैं–खलासी जी ! खलासी जी सरकारी आदमी हैं। खलासी जी यदि लाल पत्तखा दिखला दें तो डाक–गाड़ी भी रुक जाए। रुकेगी नहीं ? लाल पत्तखा देखते ही रेलगाड़ी रुक जाती है। लाल ओढ़ना ओढ़कर गाड़ी पर चढ़ने जाओ तो गाड़ी रुक जाएगी और ओढ़ना चम्पत हो जाएगा । खलासी जी बहुत गुनी आदमी हैं। पक्का ओझा हैं।''[2] चक्कर पूजते हैं। भूत–प्रेत को पेड़ में काँटी ठोंककर बस में करते हैं। बाँझ–निपुत्तर को तुकताक कर देते हैं । कुमर विज्जैभान, लोरिका और सुरंगा–सदाब्रिज का गीत जानते हैं। गला कितना तेज है । उस बार सुराजी हूलमाल में खलासी जी ने लिख दिया था बैगनबाड़ी के जमींदार के लड़के ने रेल का लैन उखाड़ा है।

'मैला आँचल' इनकी सर्वप्रथम कृति है, जिसमें बिहार अंचल के मेरी गंज गाँव का जनजीवन साकार हो उठा है। 'परती परीकथा' में परानपुर अंचल सजीव हो उठा है। इसी प्रकार कितने चौराहे में भी मैथिली क्षेत्र अररियाकोट का जनजीवन साकार हो उठा है। 'जुलूस' में नवीनगर कॉलोनी का वर्णन है। इसमें गोखियर गाँव का जनजीवन चित्रित हुआ है। 'दीर्घतपा' में भी आंकीपुर गाँव समग्रतः साकार हो उठा है। साथ ही वहाँ के वर्किंग वीमेंस हॉस्टल को केन्द्रबिन्दु बनाकर वहाँ के रहन–सहन एवं दूषित परिवेश को उभारा गया है। 'पलटू बाबू रोड' में पूर्णिया जिले के बेरमाछी अंचल का जनजीवन उभारा गया है। रेणु कृत 'मैला आँचल' को ग्रामीण जीवन का महाकाव्य कहा गया है। अन्ततः रेणु आंचलिक उपन्यासकार के रूप में श्रेष्ठ कृतियों के सर्जक बने रहे। आंचलिक उपन्यास में देशकाल प्रमुख तत्त्व के रूप में उभरकर सामने आता है। मैला आँचल में मैथिल अंचल का स्वरूप अनेक रूपों में उभरकर सामने आया है। इस उपन्यास के घटनास्थल मैथिल अंचल के अन्तर्गत है और मेरीगंज लगभग सभी घटनाओं का आधार स्थल है। मेरीगंज पूर्णिया जिले के पूर्वी अंचल का गाँव है। पूर्णिया जिले का यह पूर्वी अंचल मलेरिया और कालाजार से पीड़ित भाग है। डॉक्टर प्रशान्त इसी दृष्टि से यहाँ आया है और एक परिच्छेद में उसके द्वारा परीक्षित रोगियों की अनेक केस–हिस्ट्री दी गयी हैं। इतना ही नहीं, मेरीगंज नाम में अन्तर्निहित मेरी नाम की स्त्री मलेरिया से ही मरी थी, जिसका वर्णन पूर्व की कथा में किया गया है। यहाँ पहुँचने पर डॉक्टर ने मलेरिया और कालाजार के अतिरिक्त जिन सामाजिक खतरनाक रोगों को देखा, वे हैं–गरीबी और जहालत। इन रोगों का चित्र उपन्यास में आद्यान्त हुआ है।

''मैला आँचल का रूप उसकी सामाजिक, राजनीतिक चैतन्य, धार्मिक विष्वास आदि के द्वारा भी व्यक्त हुआ है। इनका कथ्य के प्रसंग में सविस्तार परिचय दिया जा चुका है। लेखक ने प्रकृति चित्रण की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया है, क्योंकि उसका उद्देश्य मेरीगंज के समाज का चित्रण करना है। यथाप्रसंग वातावरण–चित्रण की सूक्ष्मताएँ देखी जा सकती हैं। लाठियाँ लेकर यादवों द्वारा राजपूत टोली की ओर भागने पर खूँटे में बँधे हुए बैलों के कान खड़े हो जाते हैं और गाँव के बाहर चरनेवाली बकरियाँ मिमियाती हुई गाँव में भागी चली आती हैं।''[3] इसी प्रकार भंडारे की घोषणा के समय तुरही की आवाज सुनते ही गाँव के कुत्ते दल बाँधकर भौंकना शुरू कर देते हैं और छोटे–छोटे नवजात पिल्ले

तो भौंकते–भौंकते परेशान ही हैं। हीरू द्वारा पार्वती की माँ को मार डालने के प्रसंग में तो कुत्तों के शोर के मारे कुछ पता ही नहीं चल पाता कि हुआ क्या है? कालीचरन की खोज में पुलिस के मेरीगंज में आने पर माघ में ठिठुरते हुए सन्नाटे में कालीचरन की माँ की दर्द भरी पुकार गाँव के कोने–कोने में फैल जाती है। हरगौरी के मरने पर उसके बैलों का घास–पानी छोड़ना और अँधेरे में विदियारथी जी को देखकर बालदेव की गाड़ी में जुते हुए बैलों का बिदकना भी लेखक ने चित्रित किया है। इसी प्रकार रात के एकान्त में बावनदास को सामने देखकर गाड़ी के बैल छिउँ... करके भड़क उठते हैं। कहीं–कहीं प्रकृति के संक्षिप्त वर्णन हैं, जैसे 44 भुस्कुवा तारा जगमग कर रहा है। कमला नदी के गड्ढे में उसकी छाया झिलमिला रही है। लगता है, नीलकमल खिला है। मेरीगंज अंचल के चित्रण में परीकथाओं और गीतों ने भी रंग भरा हैं।

लोरिक या बिज्जेभान की कथा और सारंगा–सदाब्रिज की कथा के प्रसंग इस दृष्टि से देखे जा सकते हैं। सारंगा–सदाब्रिज की कथा तो खलासी जी की कथा में उठावदार ढंग से रंग भरती है। चौती, बटगमनी, फगुवा आदि के गीतों का सविस्तार विवेचन शैली के प्रसंग में किया जाएगा। गीतों के अतिरिक्त विदापत नाच, सावित्री नाच आदि के प्रसंगों का उपन्यास में समावेश किया गया है। **''जाट–जट्टिन का खेल भी एक स्थान पर चित्रित है। इस खेल को देखने का अधिकार केवल स्त्रियों को है। पुरुषों में से केवल वे ही लोग इस खेल को देख सकते हैं, जिनकी मूँछें अभी उगी नहीं हैं। यदि कोई मूँछवाला इस खेल को देख ले, तो उसकी बात पंचायत में पहुँच जाती है।''**[4]

उपन्यास में प्रसंगत होली, सतुआनी, सिखा आदि पर्वों का उल्लेख किया गया है। होली के पर्व पर डॉक्टर और कमला के होली खेलने के प्रसंग में एक लोकविष्वास का उल्लेख किया गया है– **''कहते हैं, सिन्दूर लगाते समय जिस लड़की के नाक पर सिन्दूर झड़कर गिरता है, वह अपने पति की बड़ी दुलारी होती है। इसी प्रकार डायन, जिन्न आदि से सम्बन्धित विष्वासों को विभिन्न प्रसंगों में पिरोया गया है। चौत संक्रान्ति के दिन सतुआनी पर्व होता है। इस दिन सत्तू खाने का रिवाज है। साल के प्रारम्भ में पहली वैशाख को सिखा पर्व होता है। इस दिन मछमरी होती है। गाँव के लोग इस दिन सामूहिक रूप से मछली का शिकार करते हैं। इस दिन घरों में चूल्हा नहीं जलाया जाता। वर्ष के प्रथम दिन भूमिदाह नहीं किया जाता।''**[5] पिछली रात को पकाई हुई चीजें ही खाई जाती हैं। इसी दिन जमींदार लोग नया खाता खोलते हैं मेरीगंज गाँव के निकट जंगल में सन्थालों की बस्ती भी है। परन्तु उनके रीति–रिवाज थोड़े भिन्न हैं। यहाँ तक कि वे शराब भी अलग प्रकार की पीते हैं, जिसे पंचायत कहा जाता है। मेरीगंज के लोग तो तड़बन्ना में लबनी का आनन्द उठाते हैं। खट–मिट्ठी, शहर–चिनियाँ, बैरचिनियाँ आदि ताड़ी के प्रकार हैं। बसन्ती पीकर बिरले पियक्कड़ ही होश दुरुस्त रख पाते हैं। गर्मी की शिकायत होने पर लोग पहरतिया पीते हैं। कफ प्रकृति के लोगों के लिए संझा अधिक लाभदायक होती है।

आंचलिक उपन्यास समाज जीवन का व्यापक चित्रण करता है, इसलिए यह समाज का क्षैतिज छेद (क्रॉस सेक्शन) पेश करता है। इसलिए इस प्रकार के उपन्यासों में घटनाकाल छोटा होता है। प्रस्तुत उपन्यास का घटनाकाल केवल सवा वर्ष का है। डॉक्टर प्रशान्त ने विदेश जाने से इंकार करके देशवासियों की सेवा करने का व्रत अपनाया वह सन् 1947 ई. के प्रारम्भ में मेरीगंज पहुँचा। उसके पहुँचने के दिन सेवादास ने सारे गाँव को भंडारा दिया था। इस समय बाघ को भी ठंडा कर देनेवाला माघ का जाड़ा पड़ रहा था। माघ की एक ठंडी रात का वर्णन इस प्रकार किया गया है– सूई की तरह गड़नेवाली, माघ के भोर की ठंडी हवा का देह पर कोई असर नहीं होता। ओस और पाले से तो देह शून्य हो जाता है। जब हाथ से अपनी नाक भी नहीं छुई जाती है, तब घूरे में फिर से सूखे पुआल डालकर नयी आग पैदा की जाती है। माघ के बाद फागुन की बावरी हवा में होली के गीत मँडराने लगते हैं फगुवा के गीतों से जवानों ही नहीं बूढ़ों के शरीर भी सिहर–सिहर उठते हैं जोगीड़ा और भड़ौआ के गीतों के कारण फागुन की आवारा हवा मदहोश हो उठती है। इसी समय से डॉक्टर की

जिन्दगी में कमला का नया अध्याय शुरू होता है। अब वह ऐसा नहीं कह सकेगा कि दिल नाम की कोई चीज आदमी के शरीर में है, हमें नहीं मालूम। पर अब वह महसूस करने लगा है कि कोई अगम–अगोचर चीज है, जिसमें दर्द होता है। अगर इस दर्द को मिटा दिया जाये तो आदमी जानवर हो जाएगा। दिल वह मन्दिर है जिसमें आदमी के अन्दर का देवता वास करता है।

फागुन के बाद चौत संक्रान्ति और बैशाख का सिखा पर्व आता है। उसके बाद जेठ की तपन आती है और उसके बाद आषाढ़ के बादल मादल बजाना शुरू कर देते हैं। डॉक्टर इस काल में गुलमुहर के फूलों के जादू से मन्त्रमुग्ध हो उठता है। उसे मिट्टी का मोह महसूस होने लगता है। वह सोचता है – गुल मोहर – गुल मुहर–कृष्णाचूड़ा!....गुलमुहर का कृष्णाचूड़ा नाम यहाँ कितना मौजूँ लगता है। काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुन्दर लगते होंगे। बरसात के खंडित होने पर गाँव की स्त्रियाँ जाट–जट्टिन का खेल खेलती हैं। बरसात के मौसम में ही 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को स्वराज्य का उत्सव मनाया जाता है। बरसात के बाद शरद बीती और हेमन्त का आगमन हुआ। लोग जाड़े से काँप रहे थे और इन्हीं दिनों दिल को कँपानेवाला गाँधीवध का समाचार आया। माघ से प्रारम्भ किया गया उपन्यास फिर माघ तक पहुँच जाता है। फणीष्वर नाथ रेणु का मैला आंचल प्रासंगिक उपन्यास है जिसमें ग्रामीण परिवेष और देहाती संस्कृति को व्यक्त किया है। उपन्यासकार ने उपन्यास के माध्यम से पूरी मानव जाति को ग्रामीण संस्कृति से परिचय कराकर आम जन को दिषा दी है।

सन्दर्भ सूची

1- फणीष सिंह, हिन्दी के आंचलिक उपन्यास एवं उपन्यासकार, भारतीय ज्ञानपीठ, संस्करण–2015, पृश्ठ–128
2- रेणु फणीष्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण–2003, पृश्ठ–10
3- रेणु फणीष्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण–2003, पृश्ठ–11
4- रेणु फणीष्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण–2003, पृश्ठ–13
5- रेणु फणीष्वरनाथ, मैला आँचल, राजकमल पेपरबैक्स, संस्करण–2003, पृश्ठ–14